भभो भैंस

कहानी: त्रिपुरारी शर्मा
चित्र: अतनु राय

कहानी: त्रिपुरारी शर्मा

भारतीय रंगमंच के क्षेत्र में त्रिपुरारी शर्मा को लोग एक वरिष्ठ रंगकर्मी के रूप में जानते हैं। त्रिपुरारी नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में प्रोफेसर हैं जहाँ वे अभिनय, लेखन और निर्देशन सिखाती हैं। त्रिपुरारी दिल्ली विश्वविद्यालय और नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा से स्नातक हैं। उन्होंने बच्चों के लिए कई नाटकों का निर्देशन किया है। त्रिपुरारी ने एन एस डी थियेटर कंपनी, थियेटर इन एजुकेशन और अलारिप्पु जैसी संस्थाओं के साथ काम किया है। उन्हें अपने नाटकों में ऐसे चरित्र गढ़ना अच्छा लगता है जिन्हें बच्चे पसंद करें। त्रिपुरारी के काम को कई सम्मानों से सराहा गया है जिनमें सफ़दर हाशमी सम्मान और संस्कृति सम्मान प्रमुख हैं।

Story: Tripurari Sharma

Tripurari Sharma is a well-known theatre personality in India and currently works as a professor of Drama at the National School of Drama (NSD), where she teaches acting, writing, and directing. A graduate from Delhi University and NSD, Sharma has written and directed numerous plays including children's productions. She has worked with both the NSD theatre company, Theatre in Education, and the Alarippu organization. Sharma enjoys creating engaging characters and plots that children relate to. Her work has received many honors including the Safdar Hashmi Award and the Sanskriti Award.

चित्र: अतनु राय

वरिष्ठ चित्रकार और डिज़ाइनर श्री अतनु राय ने पहली किताब तब चित्रित की जब वे आज से लगभग चालीस वर्ष पहले कला के छात्र थे। तब से लेकर आज तक पिछले चार दशकों में उन्होंने सौ से अधिक किताबों के लिए चित्र बनाए हैं। श्री राय ने अनेक संस्थाओं तथा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन समूहों के लिए काम किया है। शिक्षाविदों तथा प्रकाशन संस्थाओं के संपादकों के साथ काम करते हुए उन्होंने हमेशा इस बात पर बल दिया कि सचित्र पुस्तकों के लिए चित्र और दृश्य उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितने शब्द और वाक्य। चित्र बनाते हुए श्री राय छोटी–बड़ी सभी बातों का ध्यान रखते हैं। वे अपने चित्रांकन में मूल कथा को तो जीवंत बनाते ही हैं, अपनी कल्पनाशीलता से कई बार उसमें नई उपकथाएँ भी जोड़ देते हैं। उनके चित्र नन्हें पाठकों को गुदगुदाते हैं और पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। श्री अतनु राय को उनके काम के लिए अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

Illustration: Atanu Roy

Atanu Roy is an acclaimed illustrator and designer. He began illustrating picture books for children while earning his bachelor's degree in fine arts in the early 1970s. Over the decades, Roy has illustrated hundreds of picture books and textbooks for a range of publishing houses. He has also worked extensively with educators, curriculum developers, and editorial teams to guide them on visual literacy practices. Roy is committed to creating engaging characters to help promote literacy among young readers. He is known for developing humorous characters with great detail, and adding subtext in stories by introducing additional visual elements. Roy has won several national and international awards for his illustrative works.

एक दिन बरसात में भभो भैंस के सींग भीग गये। फिर जब हवा चली तो गीले सींगों पर धूल–मिट्टी जम गई। फिर उड़ती चिड़िया की चोंच से गिरकर किसी पेड़ का बीज सींग पर आ गिरा। बीज में अंकुर फूटा और एक पौधा उग आया। आपको क्या लगता है भभो अपने सींग पर उगते हुए पेड़ का क्या करेगी?

Babhoo Buffalo has a unique horn. One day, her horn got wet in the rain. Then, dirt blew in her direction and stuck to her wet horn. The next day, a bird flying by dropped a seed that feel onto Babhoo's horn. Soon the seed sprouted into a tree. What do you think Babhoo will do with a tree growing from her horn?

Room to Read

World Change Starts with Educated Children®

Room to Read

Bhabhoo the Buffalo

Story	Tripurari Sharma
Illustration	Atanu Roy
Publisher	Room to Read India
Editor	Manoj Kumar
Language	Hindi
Project ID	IN-LLP-13-0002
Edition	First 2013
Copies	7500 copies
Printer	Sonex Print Pack Pvt. Ltd

This book is dedicated by our children Shefali and Kiran to the children of India so that they will experience the joy of reading and the spark of imagination.

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी अंश पुनःमुद्रित नहीं किया जा सकता है।

No part of this publication may be reproduced in whole or in part or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the publisher.

ISBN 978-93-81038-45-1

© 2013 All rights reserved: Room to Read

Room to Read India Trust,
Office No. 201E (B), 2nd floor,
D-21 Corporate Park,
Sector – 21, Dwarka,
New Delhi – 110075
Phone - 011 30491900
www.roomtoread.org

Room to Read seeks to transform the lives of millions of children in developing countries by focusing on literacy and gender equality in education. Working in collaboration with local communities, partner organizations and governments, we develop literacy skills and a habit of reading among primary school children, and support girls to complete secondary school with the relevant life skills to succeed in school and beyond.

भभो भैंस
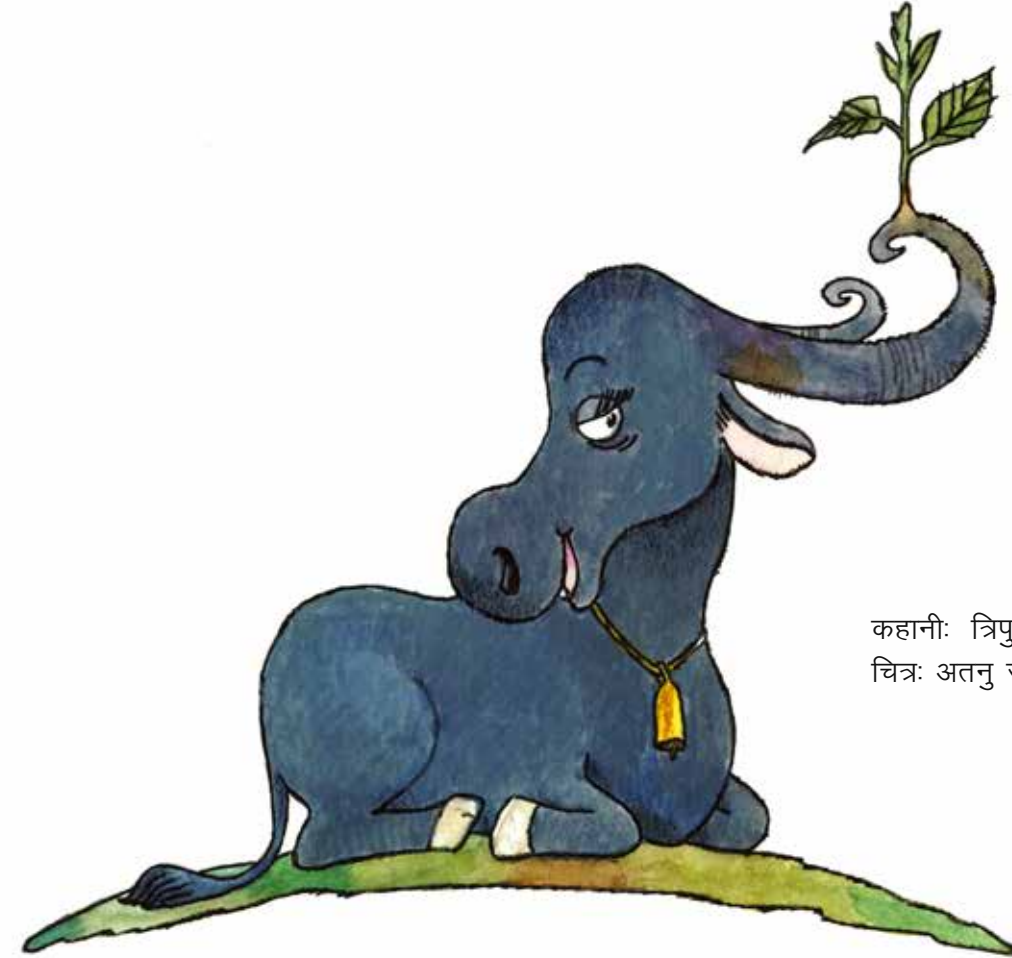
कहानीः त्रिपुरारी शर्मा
चित्रः अतनु राय

World Change Starts with Educated Children®

बरसात में भभो भैंस के सींग भीग गए। फिर जब हवा चली तो गीले सींगों पर धूल-मिट्‌टी जम गई। भभो ने उन्हें पोंछा नहीं।
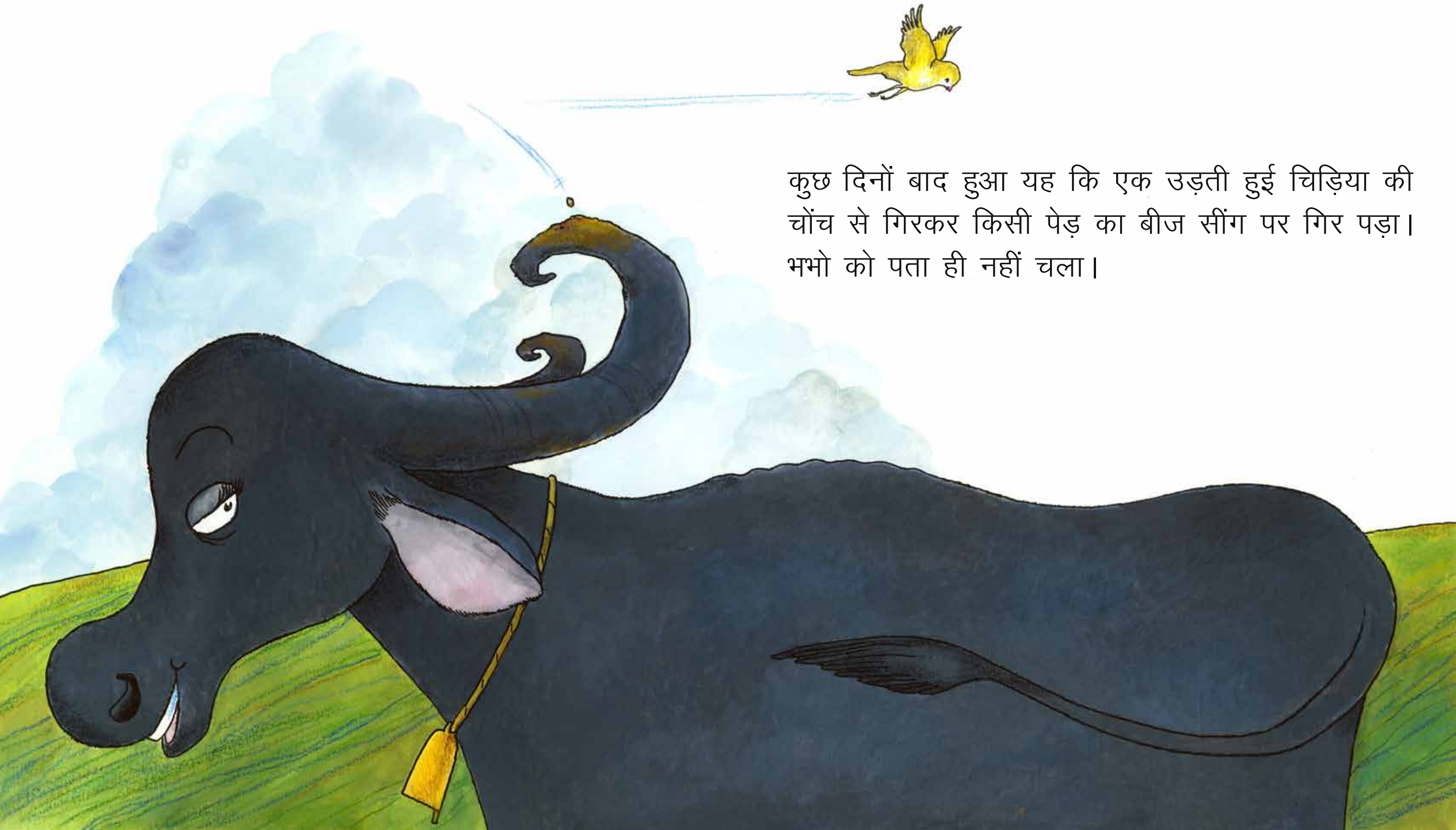
कुछ दिनों बाद हुआ यह कि एक उड़ती हुई चिड़िया की चोंच से गिरकर किसी पेड़ का बीज सींग पर गिर पड़ा। भभो को पता ही नहीं चला।

धीरे–धीरे बीज से अंकुर फूटा। देखते ही देखते पौधा बड़ा होने लगा।
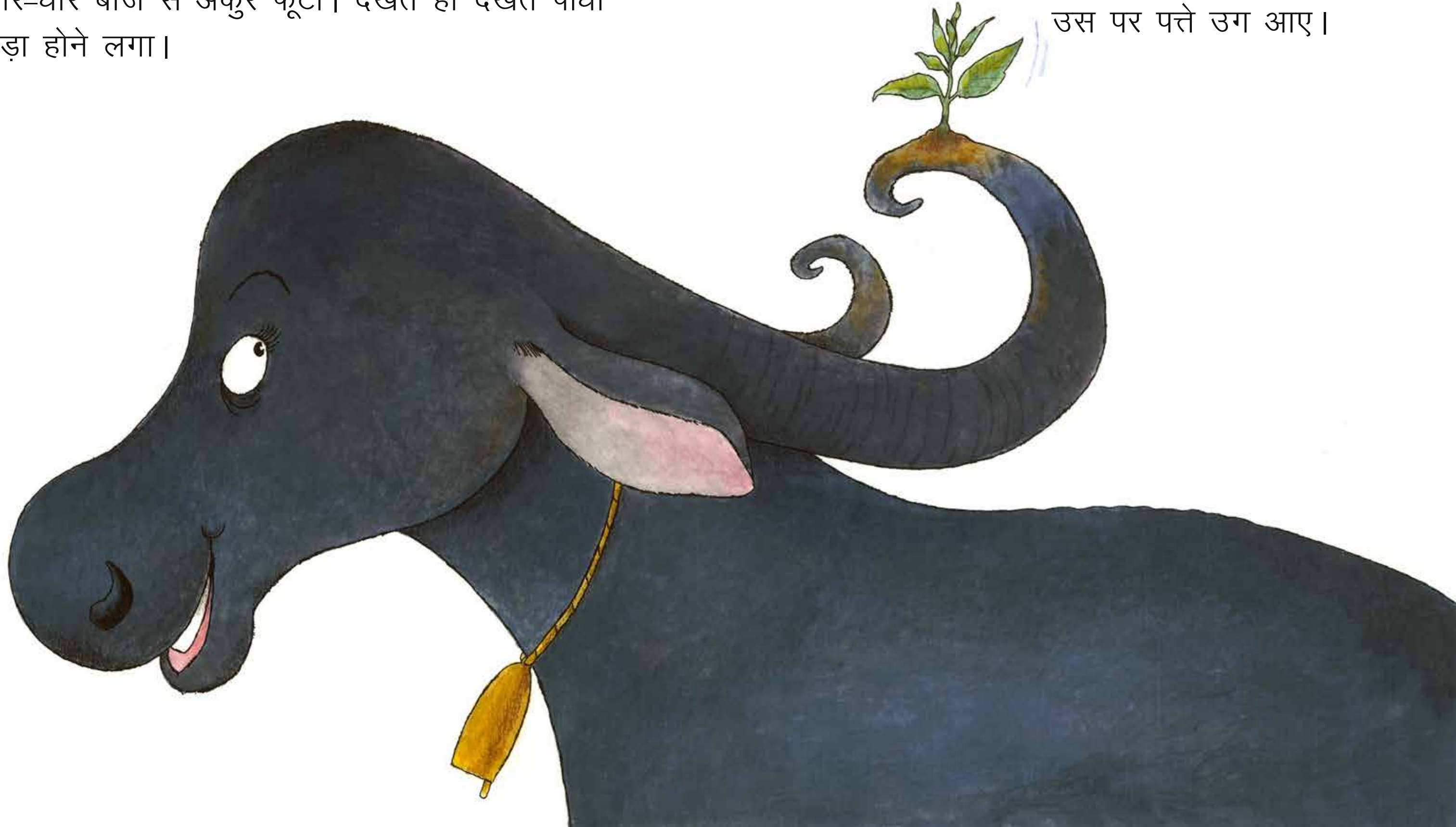
उस पर पत्ते उग आए।

टहनियाँ फैलने लगीं। सभी भभो का हाल देख चिंतित होते, मगर भभो कतई परेशान न थी। वह कहीं भी बैठी रहती।
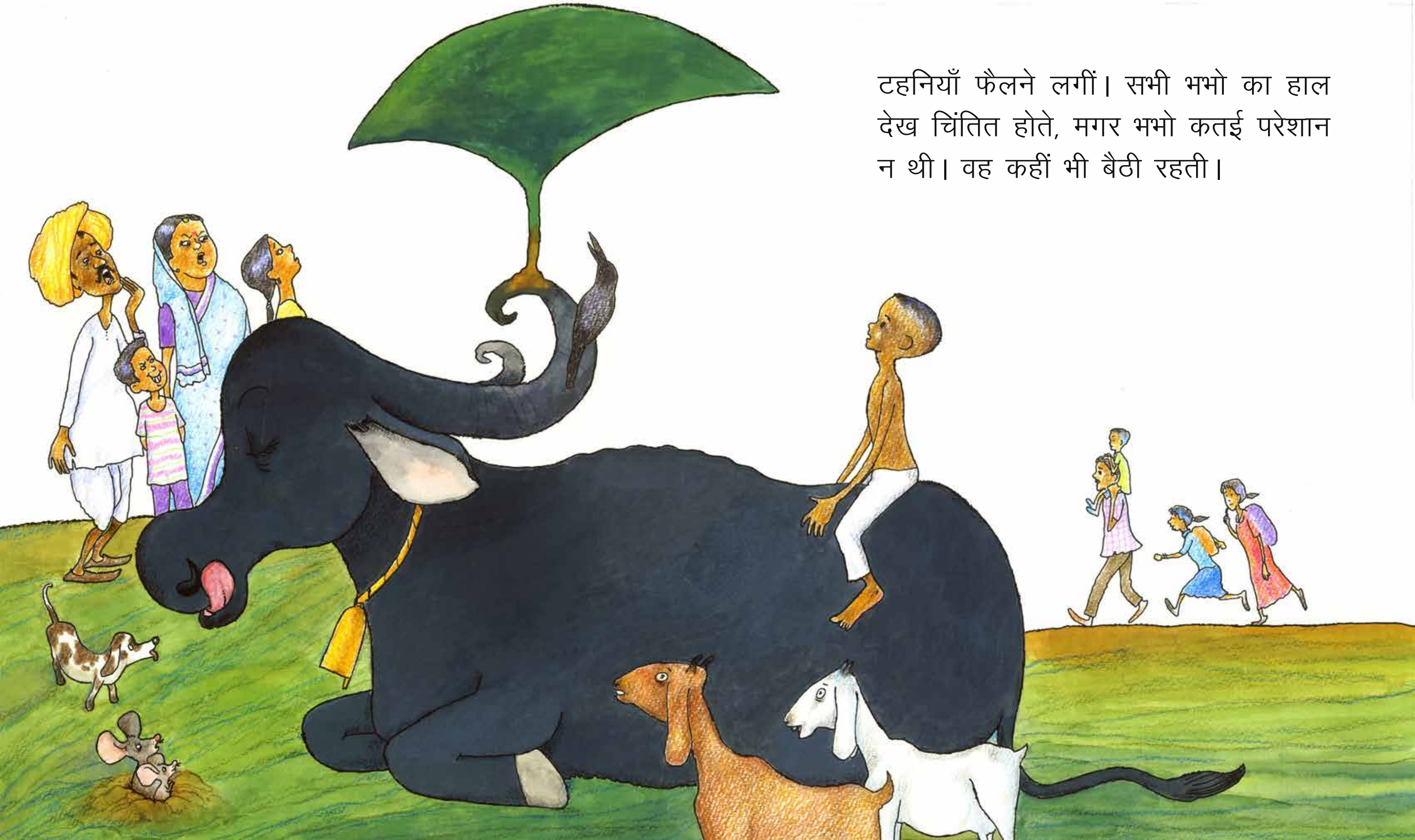
धूप तेज़ होने पर बाकी भैंसें छाया के लिए इधर–उधर भागतीं, मगर भभो के लिए अब उतना हिलना भी ज़रूरी न था। वह हँसकर कहती– "मेरे पास तो अपनी छतरी है।"

बाकी सब कहते भी तो क्या, उसके सींग पर उगा हुआ पेड़ जो था।
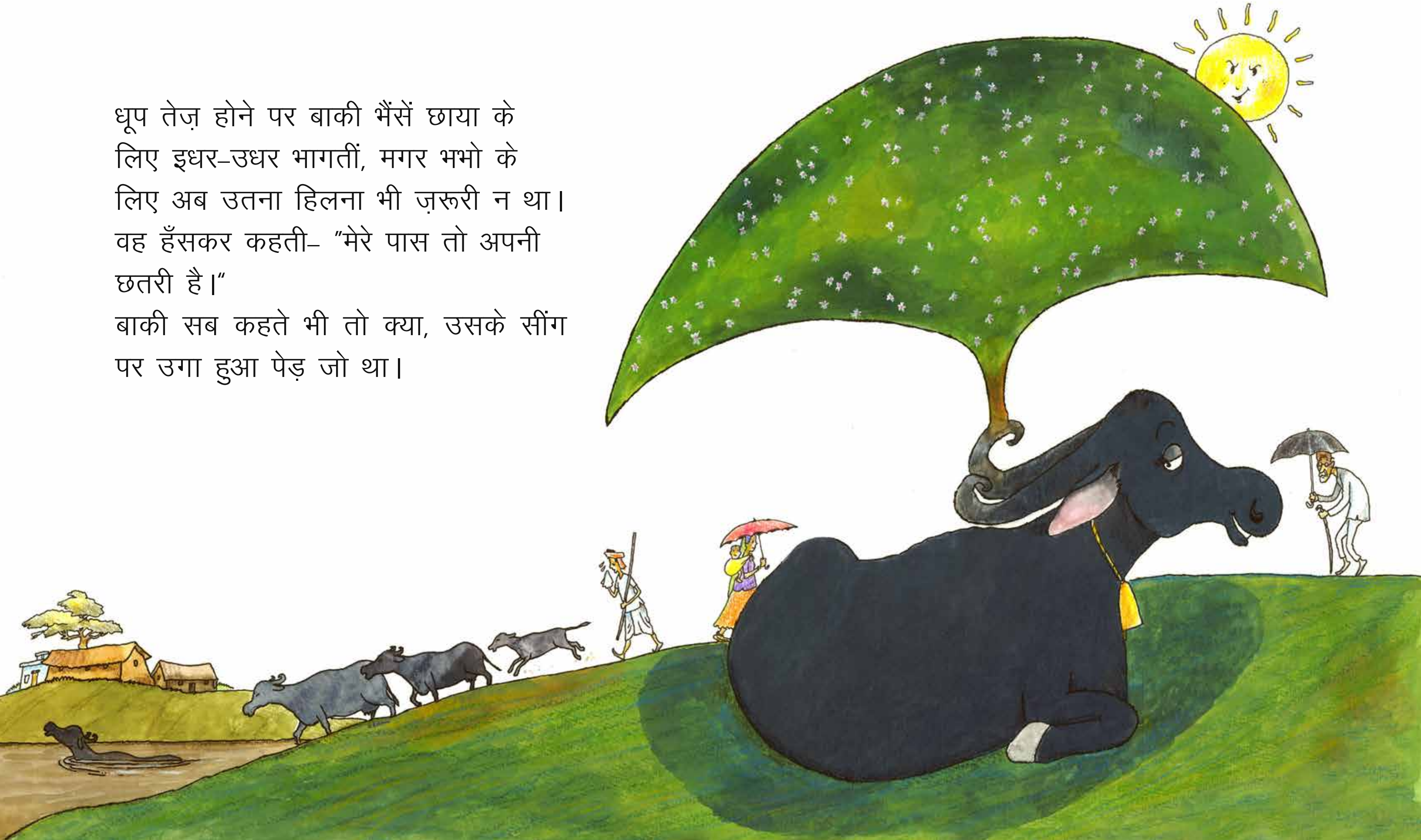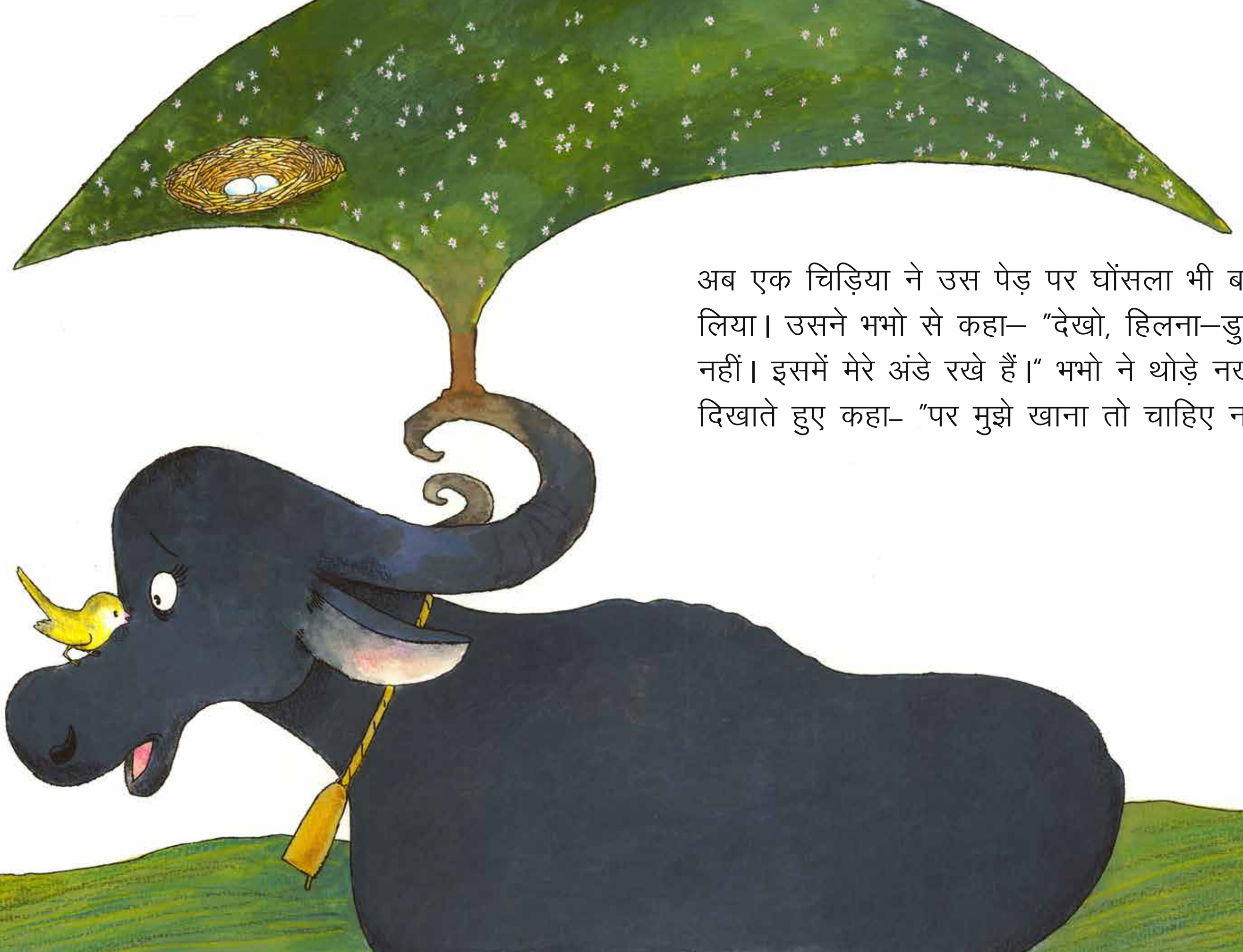
अब एक चिड़िया ने उस पेड़ पर घोंसला भी बना लिया। उसने भभो से कहा– "देखो, हिलना–डुलना नहीं। इसमें मेरे अंडे रखे हैं।" भभो ने थोड़े नखरे दिखाते हुए कहा– "पर मुझे खाना तो चाहिए न।"

चिड़िया ने कुछ सोचा। उसे भभो की बात सही लगी। उसने बाकी चिड़ियों से कहा– "हम भभो को वहीं खाना पहुँचा दिया करेंगें।"
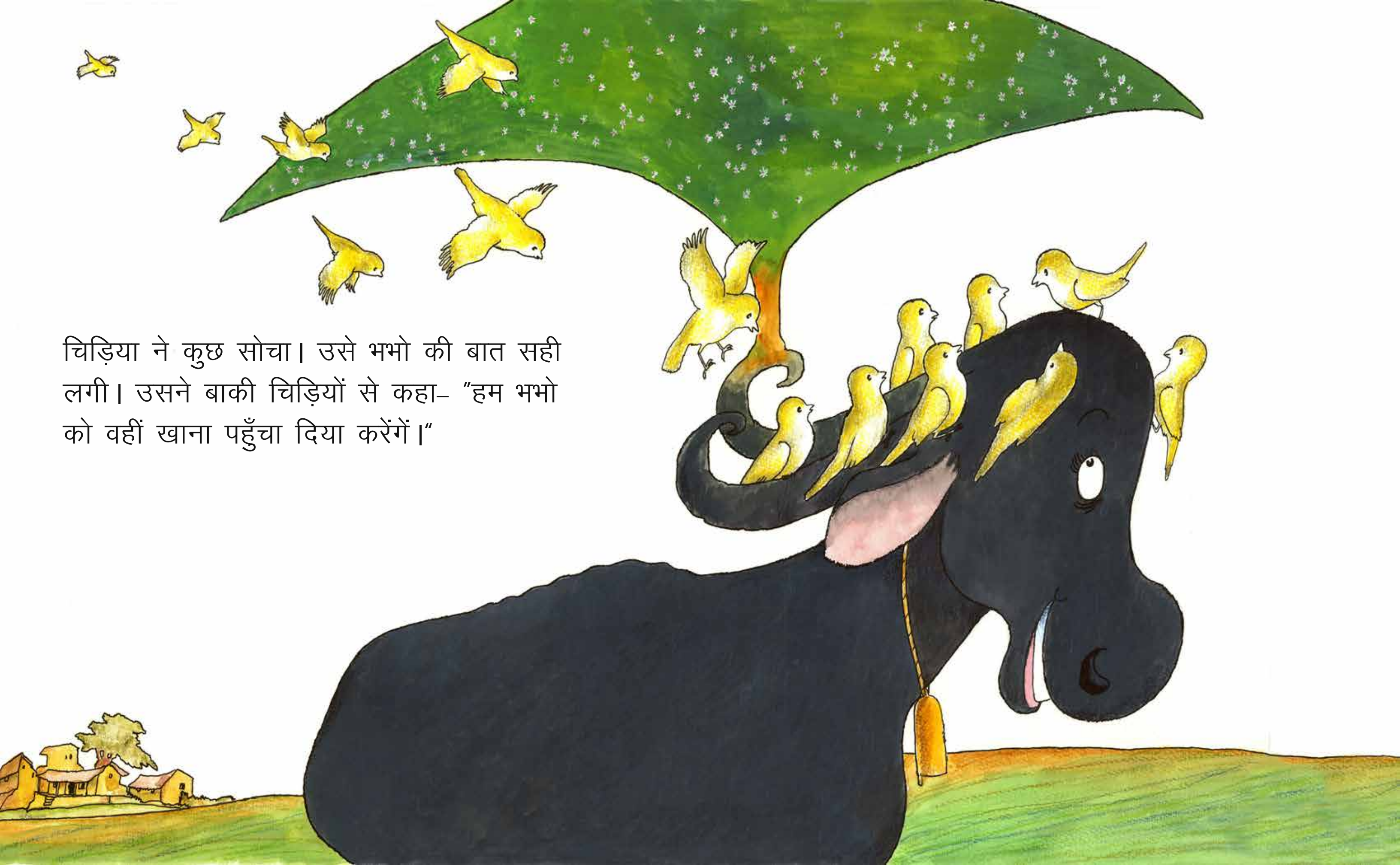
बस अब भभो को और क्या चाहिए था। मज़े से बैठकर खाती और सींग पर लगी छतरी की छाया में आराम करती।
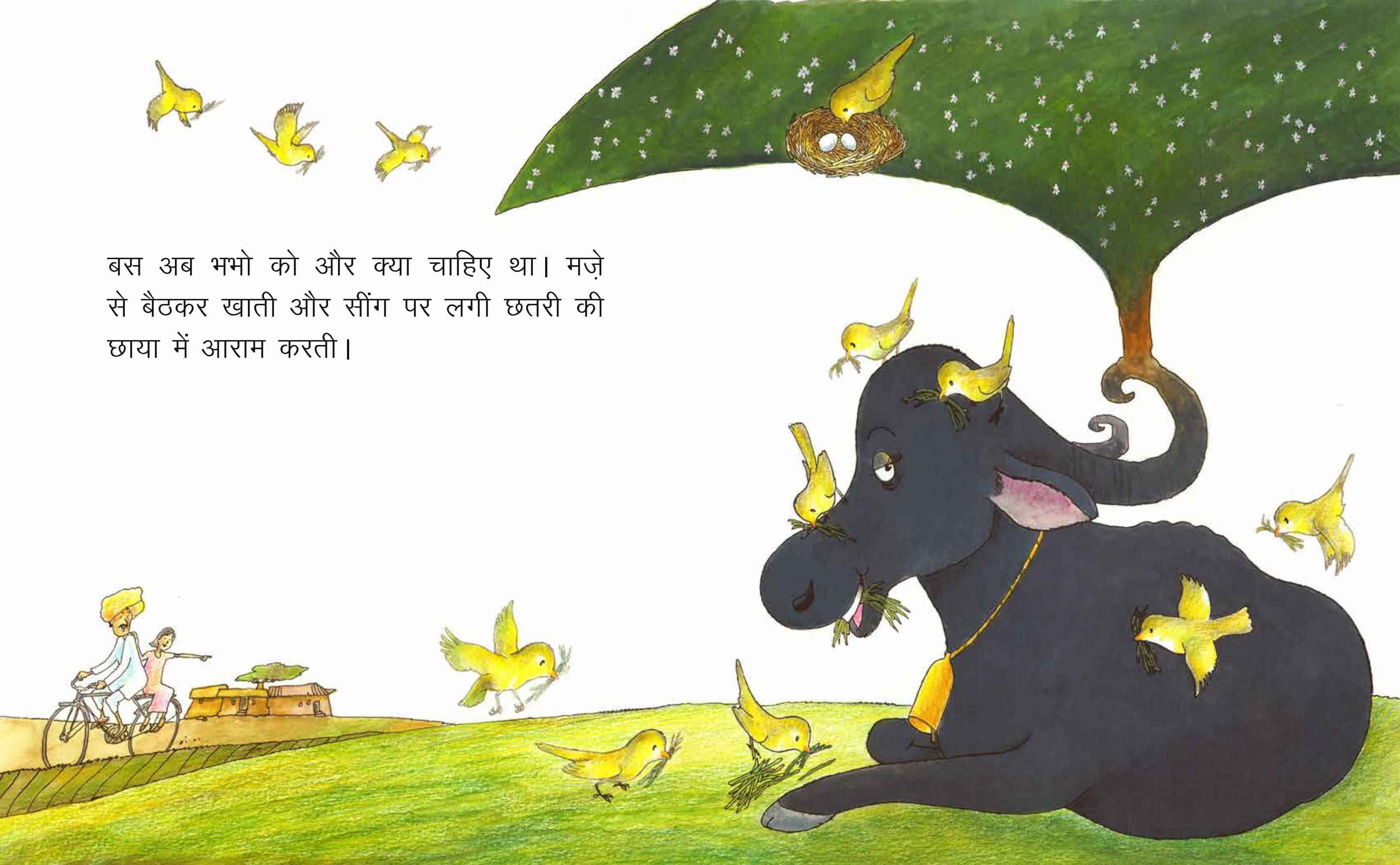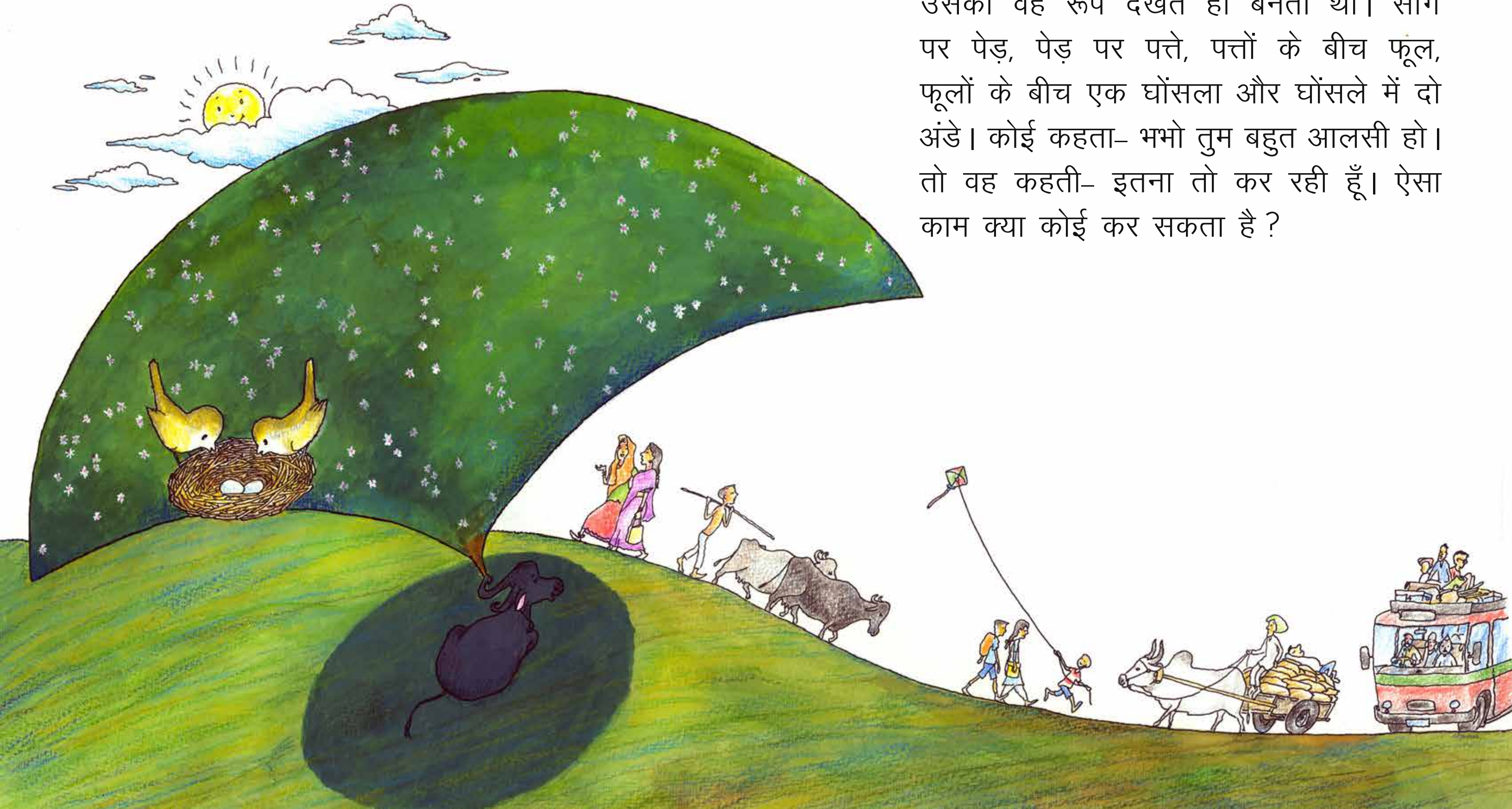
उसका वह रूप देखते ही बनता था। सींग पर पेड़, पेड़ पर पत्ते, पत्तों के बीच फूल, फूलों के बीच एक घोंसला और घोंसले में दो अंडे। कोई कहता– भभो तुम बहुत आलसी हो। तो वह कहती– इतना तो कर रही हूँ। ऐसा काम क्या कोई कर सकता है?

लेकिन सच तो यह था कि उसकी इस बात का किसी के पास जवाब ही नहीं था। सबको पता था अंडों में से निकलेंगे बच्चे, बच्चों के आएँगे पंख, पंख फैला के उड़ जाएँगे वे एक दिन। पर भभो टस से मस न होगी, यूँ ही बैठी रहेगी।